शिक्षा के उद्देश्यों का वर्गीकरण
(Classification of Aims of Education)

"शिक्षा के अपने कोई उद्देश्य नहीं हैं।" – John Dewey.
"Education as such has no aims."

उनका निर्माण व्यक्ति या समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाता है। वे या तो लोगों की उन्नति के लिए या समाज के आदर्शों की प्राप्ति के लिए, या इन दोनों के लिए निश्चित किये जाते हैं। शिक्षा के उद्देश्यों के विभिन्न स्वरूप होते हैं। हम शिक्षा के सब उद्देश्यों का निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकरण कर सकते हैं:-

1. सार्वभौमिक उद्देश्य : Universal Aims
2. विशिष्ट उद्देश्य : Particular Aims
3. वैयक्तिक उद्देश्य : Individual Aims
4. सामाजिक उद्देश्य : Social Aims

1. सार्वभौमिक उद्देश्य : Universal Aims — शिक्षा के सार्वभौमिक उद्देश्य सम्पूर्ण मानव जाति पर सामान्य रूप से लागू होते हैं। इस प्रकार के कुछ महत्वपूर्ण उद्देश्य वे हैं; जिससे मानव-गुणों का विकास होता है; जैसे- प्रेम, अहिंसा, मानव के व्यक्तित्व का संतुलित विकास उचित शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, समाज की प्रगति आदि। इस की प्रकृति और स्रोत असीमित होती है। अत: ये उद्देश्य सनातन, निश्चित तथा अपरिवर्तनशील होते हैं। सभी शिक्षा-दर्शन और सिद्धान्त इसके बारे में एक मत हैं।

2. विशिष्ट उद्देश्य : Particular Aims — विशिष्ट उद्देश्यों को "निश्चित उद्देश्यों या असामान्य उद्देश्यों" (Specific Aims) भी कहते हैं। इस उद्देश्यों का स्रोत तथा प्रकृति सीमित होती है। इसका निर्माण भी किसी विशेष परिस्थिति तथा विशेष कारण को ही ध्यान में रखकर किया जाता है। इस दृष्टि से ये उद्देश्य लचीले, अनुकूलन योग्य तथा परिवर्तनशील होते हैं।

Scanned with CamScanner

दूसरे शब्दों में, शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य देश, काल तथा परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं। जैसे- एक पिछड़ा देश - विज्ञान और तकनीकी विषयों के अध्ययन पर बल देता है, जिससे उस देश की भौतिक उन्नति हो सके। Teacher बहाली Jharkhand में - B.Ed की शुरुआत।

3. वैयक्तिक उद्देश्य (Individual Aim) :- व्यक्तिवादियों के अनुसार समाज की अपेक्षा व्यक्ति बड़ा है। वैयक्तिक उद्देश्य - व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए सामग्री जुटाता है। यह उनकी वैयक्तिकता (Individuality) को सफल, समर्थ और शक्तिशाली बनाने का प्रयास करता है। सर पर्सी नन (Sir Percy Nunn) ने लिखा है - "शिक्षा को ऐसी दशाएँ उत्पन्न करनी चाहिए, जिनसे वैयक्तिकता का पूर्ण विकास हो सके, और व्यक्ति - मानव - जीवन को अपनी मौलिक योग दे सके।"

4. सामाजिक उद्देश्य (Social Aim) :- समाजवादियों के अनुसार व्यक्ति की अपेक्षा समाज बड़ा है। सामाजिक उद्देश्य के समर्थकों का मानना है कि इसके द्वारा सामाजिक एकता और सहयोग उत्पन्न होते हैं। ये यह नहीं मानते हैं कि व्यक्ति, समाज से दूर रहकर अपना विकास कर सकता है। अतः उनके अनुसार व्यक्ति को अपनी वैयक्तिकता का विकास समाज की आवश्यकताओं और आदर्शों को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। रेमॉण्ट के अनुसार - "समाज-विहीन व्यक्ति कोरी कल्पना है।"

"The isolated individual is a figment of the imagination."

- Raymont

Scanned with CamScanner